VALUE ADDITION COURSE

(VAC)

DEPARTMENT OF SANSKRIT

VALUE ADDITION COURSE (VAC)

Department of Sanskrit

Soban singh jeena University, Almora

VALUE ADDITION COURSE (VAC) PREPARED FOR THE POOL OF COURSE

Course code	Paper Title in multi study –Sanskrit	Theory/ Practial/Practice	credits
VAC-1	पंचतन्त्र में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ	Theory	2
VAC-2	संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन	Theory/ Practial	2

Department of Sanskrit

VALUE ADDITION COURSE (VAC)Sanskrit
No. of Hours-30

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
VAC- पंचतन्त्र में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ	2	2	0	0	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1.विद्यार्थी को पंचतन्त्र के कथाओं से परिचित कराना।
2. विद्यार्थी को पंचतन्त्र की कथाओं से नीतिशिक्षा प्राप्त कराना।
3. विद्यार्थी को पंचतन्त्र में मानवेतर प्राणियों की कथा से उनकी भावनाओ से परिचित कराना।
4. पंचतन्त्र के अध्ययन से मानव जीवन की अनेक समस्यों का समाधान कराना।

अध्ययन की उपलब्धि

1 विद्यार्थी पंचतन्त्र के कथाओं से परिचित होगें।
2. विद्यार्थी पंचतन्त्र की कथाओं से नीतिशिक्षा प्राप्त करेगें।
3. विद्यार्थी पंचतन्त्र में मानवेतर प्राणियों की कथा से उनकी भावनाओं से परिचित होगें।
4. पंचतन्त्र के अध्ययन से मानव जीवन की अनेक समस्यों का समाधान करेगें।

Unit	Topic-
Unit I	कथासाहित्य की परम्परा, आचार्य विष्णु शर्मा का परिचय एवं पंचतन्त्र के पॉच तन्त्रों का परिचय।
Unit II	पंचतन्त्र में वर्णित नीतिपरक शिक्षाएँ–मित्रसम्प्राप्ति से दो कथाएँ– साधु और चूहा एवं ब्राह्मणी और तिल के बीज।

Suggested Reading:

1. पंचतंत्र–आचार्य श्री विष्णु शर्मा, युवराज प्रकाशन, आगरा।
2. पंचतंत्र संस्करण–तन्त्राख्यायिका, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली।
3. पंचतंत्र संस्करण–सरल पंचतंत्र, युवराज प्रकाशन, आगरा।
4. पंचतंत्र संस्करण–दक्षिणी पंचतंत्र, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर दिल्ली।
5. पंचतंत्र संस्करण–हितोपदेश, युवराज प्रकाशन, आगरा।
6. गुणाढ्य की बृहत्कथा पर आश्रित–क्षेमेन्द्र कृत बृहत्कथा मंजरी।
7. वाल्मीकि रामायण में नीतितत्त्व–योगीन्द्र गुप्ता,अनुराधा प्रकाशन, मेरठ।
8. वेदामृतम् नीतिशिक्षा–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनसंधान परिषद् ज्ञानपुर, भदोही।

Note :

Examination: Subject to University' directions.

Department of Sanskrit

VALUE ADDITION COURSE (VAC)Sanskrit

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE **No. of Hours-30**

Course Title	Credits	Credit distribution 0f the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
VAC- संस्कृतवाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन	2	1	0	1	Pass in XII	Nil

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थी स्वयं को प्रकृति का एक हिस्सा बनाना तथा पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करना।
2. पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन भारतीय परम्परा का ज्ञान प्राप्त करना।
3. प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को समझकर उसके संरक्षण की दिशा में प्रयास करना।

अध्ययन की उपलब्धि

1. विद्यार्थी स्वयं को प्रकृति का एक हिस्सा मानेंगे तथा पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करने के महत्त्व को समझेंगे।
2. पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन भारतीय परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को समझकर उसके संरक्षण की दिशा में प्रयास करने की प्रेरणा मिलेगी।

Unit	Topic
Unit I	पर्यावरण विज्ञान : परिभाषा, क्षेत्र एवं वर्तमानकालिक चुनौतियाँ– आधुनिक काल में पर्यावरण हेतु चुनौतियाँ एवं संकट : भूमण्डलीय ऊष्मीकरण, जलवायु परिवर्तन, ओजोन क्षरण, पर्यावरण प्रदूषण में विस्फोटक वृद्धि, भूगर्भीय जलस्तर की न्यूनता, नदियों का प्रदूषण, व्यापक निर्वनीकरण, प्राकृतिक आपदाएँ यथा : बाढ़, सूखा एवं भूकम्प। संस्कृत साहित्य में प्रकृति के संरक्षण, वृक्षारोपण, उनका संरक्षण एवं जल संरक्षण विधियों का संक्षेप में सर्वेक्षण।
Unit II	संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण विषयक प्रमुख विचार–ऋग्वेद के नदी सूक्त में नदियों के संरक्षण की कामना। यजुर्वेद में पंचतत्त्वों की शान्ति तथा पर्यावरण की अनुकूलता विषयक विचार। अथर्ववेद में पर्यावरण के लिए प्रयुक्त शब्द : वृतावृता, अभिवारा, परिवृता। पर्यावरण से आच्छादित ब्रह्माण्ड के पाँच मूल तत्त्व : पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में पृथिवी संबंधी विचार। अथर्ववेद के अरण्यानी सूक्त में वनस्पतियाँ के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना। वृक्षायुर्वेद में वर्णित प्रकृति का शास्त्रीय विधि से उपयोग।यज्ञ के द्वारा प्राकृतिक चक्र का संतुलन।

Suggested Reading:

1. वेदों में विज्ञान, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, भदोही।
2. अथर्ववेद संहिता– सायणभाष्य/विश्वबन्धुशास्त्री, वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर।
3. ऋग्वेद संहिता– सायणभाष्य/विश्वबन्धुशास्त्री, वैदिक शोधसंस्थान होशियारपुर।
4. यजुर्वेद संहिता–स्वामी दयानन्द,वैदिक मन्त्रालय अजमेर।
5. आर्य, कमलनारायण, वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण एवं प्रदूषण, स्वामी दिव्यानन्द प्रकाशन, रायपुर, मध्य प्रदेश, 1998
6. महर्षि वाल्मीकिकृत– श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण– गोरखपुर गीता प्रेस।
7. महर्षि व्यासकृत– महाभारत– सम्पादक मण्डल वी0एस0 सूकथङकर, एडगर्टन, रघुवीर आदि पुणे, भाण्डाकर प्राच्य विद्यामंदिर 1933–1959।
8. कालिदास ग्रन्थावली– आचार्य पं0 सीताराम शास्त्री, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान,लखनऊ।

Note :

Examination: Subject to University' directions.

----------0----------